जन्म कुंडली

नमूना व्यक्ति

18/06/1995 07:45:00

Pune, Maharashtra, India

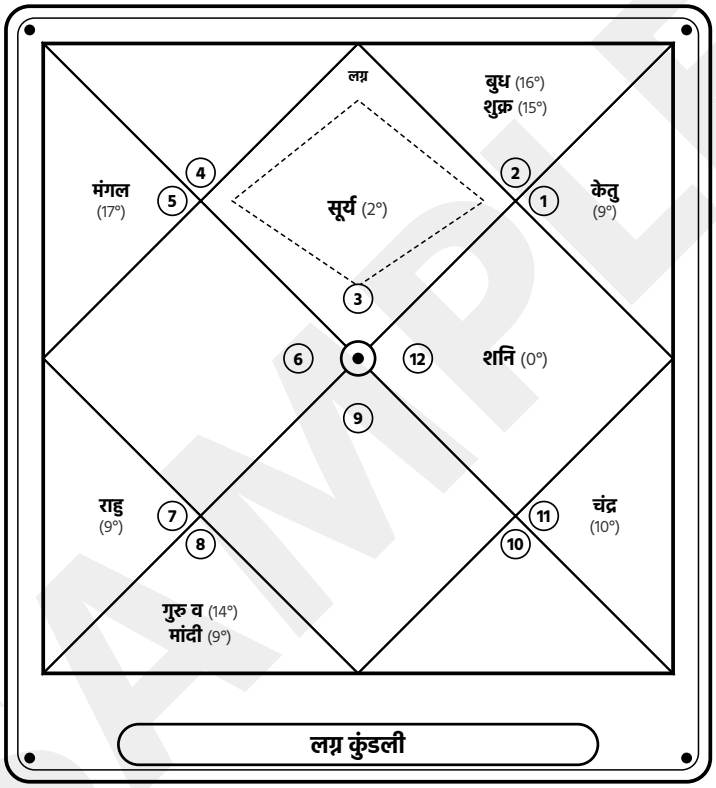

इस कुंडली में दोष:

चंद्र से मांगलिक दोष है (इसे सामान्यतः हल्का माना जाता है): मंगल आपके चंद्र से भाव 7 में है।

इनकी व्याख्या, उपायों सहित, आगे के पृष्ठों में दी गई है।

इस कुंडली की गणना सही करने में पूरी सावधानी बरती गई है। ज्योतिष व्याख्या की एक पारंपरिक पद्धति है, और यहाँ दी गई गणनाएँ तथा फलादेश बिना किसी भी प्रकार की गारंटी या वारंटी के, चाहे व्यक्त हो या निहित, दिए गए हैं। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले अपने विवेक का उपयोग करें, और चिकित्सा, कानूनी या आर्थिक मामलों में योग्य विशेषज्ञों से सलाह लें।

निर्मित: kyaboletaare.com

SAMPLE

जन्म विवरण

नाम	**नमूना व्यक्ति**	जन्म तिथि	**18/06/1995**
जन्म समय	**07:45:00**	स्थान	**Pune, Maharashtra, India**
अक्षांश / रेखांश	**18.5196 / 73.8554**	समय क्षेत्र	**UTC+05:30 IST**
जन्म का दिन	**रविवार**	सूर्योदय / सूर्यास्त	**06:00:17 / 19:12:48**
इष्टकाल (घटी)	**04:21:48**	अयनांश (लाहिड़ी)	**23:47:47**
लग्न	**मिथुन 25:50:01**	राशि (चंद्र राशि)	**कुंभ**
नक्षत्र	**शतभिषा (चरण 2)**	चंद्र राशि पाया	**रजत**
विंशोत्तरी शेष	**राहु 13 वर्ष 2 माह 10 दिन**		

जन्म के समय पंचांग

	जन्म के समय	आरंभ	समाप्ति
तिथि	**कृष्ण 6 (षष्ठी)**	17/06/1995 17:31	18/06/1995 16:05
नक्षत्र	**शतभिषा**	18/06/1995 01:31	19/06/1995 01:09
योग	**विष्कुंभ**	17/06/1995 10:57	18/06/1995 08:33
करण	**वणिज**	18/06/1995 04:42	18/06/1995 16:05
राशि	**कुंभ**	17/06/1995 14:00	19/06/1995 19:25

अवकहड़ा चक्र

वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युंजा	तत्व
शूद्र	मानव	अश्व	राक्षस	आदि	अंत्य	वायु

SAMPLE

निरयन ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	चरण	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	भाव	अवस्था
लग्न	मिथुन	25:50:01	पुनर्वसु	2	बुध	गुरु	केतु	1	-
सूर्य	मिथुन	02:36:43	मृगशिरा	3	बुध	मंगल	केतु	1	बाल
चंद्र	कुंभ	10:13:35	शतभिषा	2	शनि	राहु	गुरु	9	कुमार
मंगल	सिंह	17:38:50	पूर्वा फाल्गुनी	2	सूर्य	शुक्र	मंगल	3	युवा
बुध	वृषभ	16:02:25	रोहिणी	2	शुक्र	चंद्र	शनि	12	युवा
गुरु (व)	वृश्चिक	14:40:06	अनुराधा	4	मंगल	शनि	राहु	6	युवा
शुक्र	वृषभ	15:13:44	रोहिणी	2	शुक्र	चंद्र	गुरु	12	युवा
शनि	मीन	00:40:37	पूर्वा भाद्रपद	4	गुरु	गुरु	मंगल	10	मृत
राहु (व)	तुला	09:04:01	स्वाति	1	शुक्र	राहु	गुरु	5	कुमार
केतु (व)	मेष	09:04:01	अश्विनी	3	मंगल	केतु	गुरु	11	कुमार
यूरेनस (व)	मकर	05:56:35	उत्तराषाढ़ा	3	शनि	सूर्य	बुध	8	मृत
नेप्च्यून (व)	मकर	01:06:49	उत्तराषाढ़ा	2	शनि	सूर्य	राहु	8	मृत
प्लूटो (व)	वृश्चिक	04:40:32	अनुराधा	1	मंगल	शनि	शनि	6	मृत
मांदी	वृश्चिक	09:57:47	अनुराधा	2	मंगल	शनि	शुक्र	6	-
भाग्यबिंदु	मीन	03:26:53	उत्तरा भाद्रपद	1	गुरु	शनि	शनि	10	-

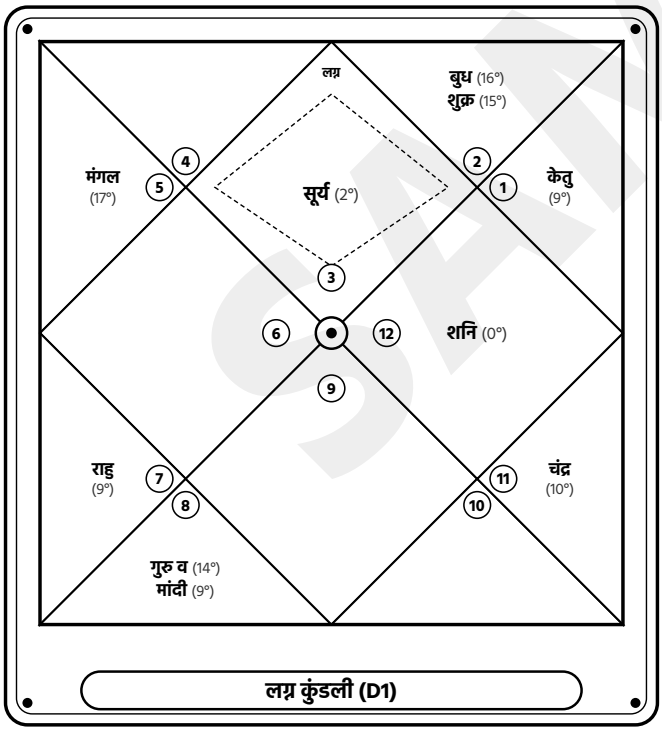

लग्न कुंडली (D1)

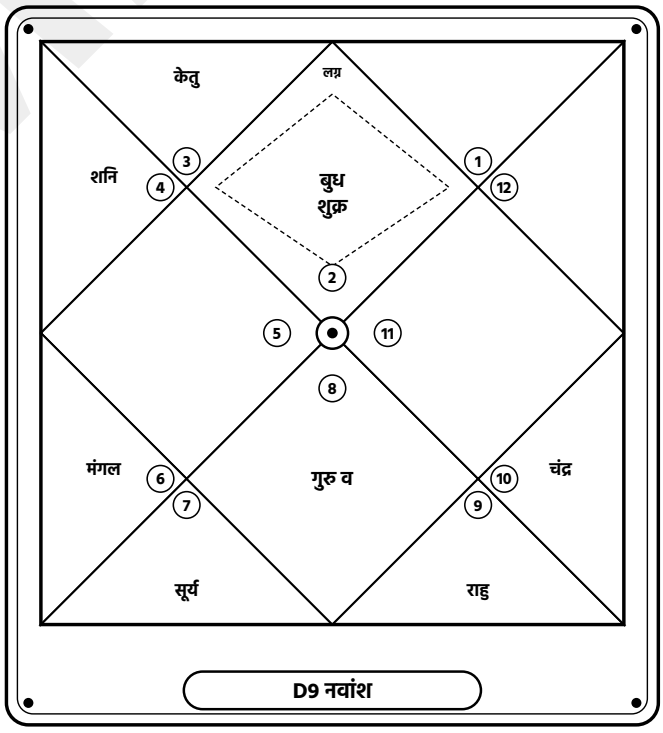

D9 नवांश

इस कुंडली में दोष:

चंद्र से मांगलिक दोष है (इसे सामान्यतः हल्का माना जाता है): मंगल आपके चंद्र से भाव 7 में है।

इनकी व्याख्या, उपायों सहित, आगे के पृष्ठों में दी गई है।

SAMPLE

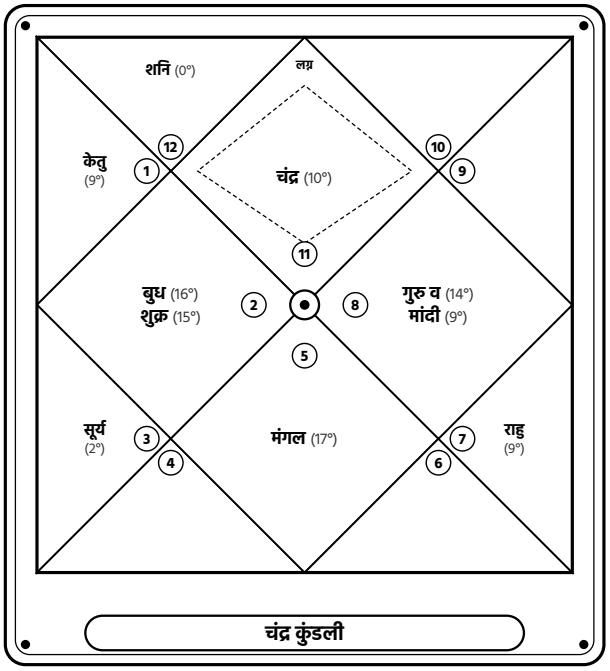

वर्गोत्तम ग्रह: बुध, गुरु, शुक्र

SAMPLE

भाव चलित और के.पी. भाव-संधि

भाव	चलित आरंभ	चलित मध्य	के.पी. संधि	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी
1	मिथुन 09:59:59	मिथुन 25:50:01	मिथुन 25:50:01	बुध	गुरु	केतु
2	कर्क 09:59:59	कर्क 24:09:56	कर्क 20:58:34	चंद्र	बुध	शुक्र
3	सिंह 08:19:53	सिंह 22:29:51	सिंह 19:05:01	सूर्य	शुक्र	राहु
4	कन्या 06:39:48	कन्या 20:49:45	कन्या 20:49:45	बुध	चंद्र	शुक्र
5	तुला 06:39:48	तुला 22:29:51	तुला 24:06:36	शुक्र	गुरु	बुध
6	वृश्चिक 08:19:53	वृश्चिक 24:09:56	वृश्चिक 26:01:27	मंगल	बुध	राहु
7	धनु 09:59:59	धनु 25:50:01	धनु 25:50:01	गुरु	शुक्र	बुध
8	मकर 09:59:59	मकर 24:09:56	मकर 20:58:34	शनि	चंद्र	शुक्र
9	कुंभ 08:19:53	कुंभ 22:29:51	कुंभ 19:05:01	शनि	राहु	चंद्र
10	मीन 06:39:48	मीन 20:49:45	मीन 20:49:45	गुरु	बुध	शुक्र
11	मेष 06:39:48	मेष 22:29:51	मेष 24:06:36	मंगल	शुक्र	बुध
12	वृषभ 08:19:53	वृषभ 24:09:56	वृषभ 26:01:27	शुक्र	मंगल	राहु

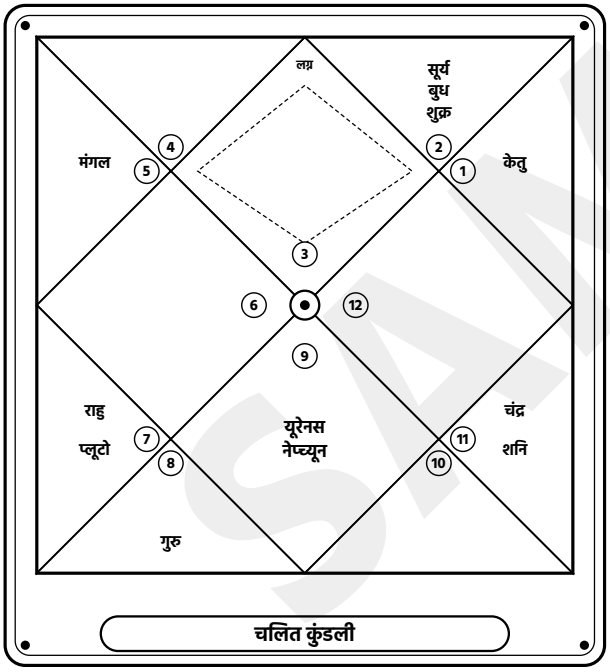

चलित कुंडली

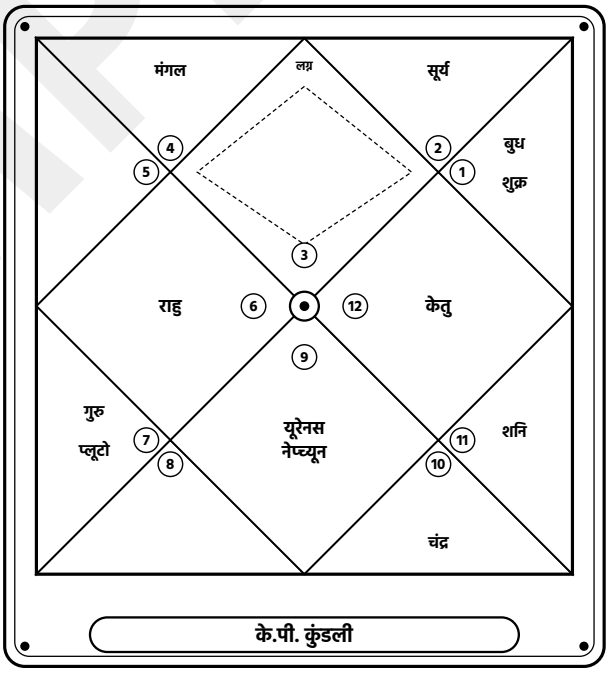

के.पी. कुंडली

SAMPLE

षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ

हर वर्ग कुंडली जीवन के किसी एक क्षेत्र को अधिक बारीकी से देखती है। D1 मुख्य जन्म कुंडली है; विवाह और भीतरी बल के लिए D9 (नवांश) और करियर के लिए D10 (दशमांश) देखी जाती है।

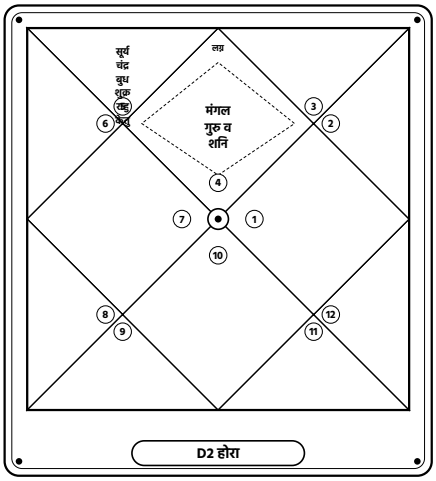

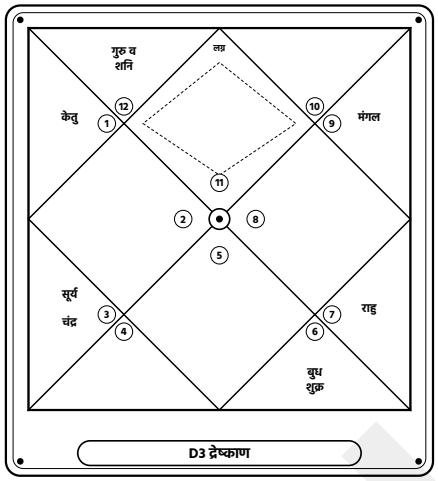

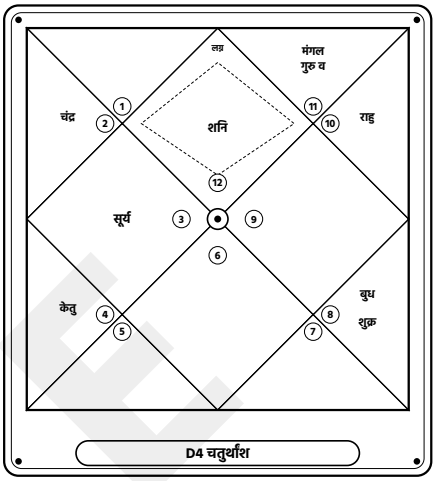

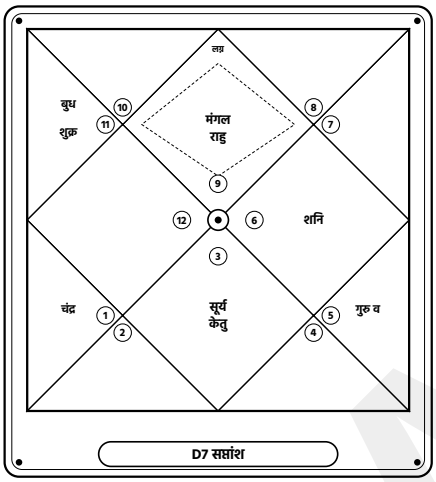

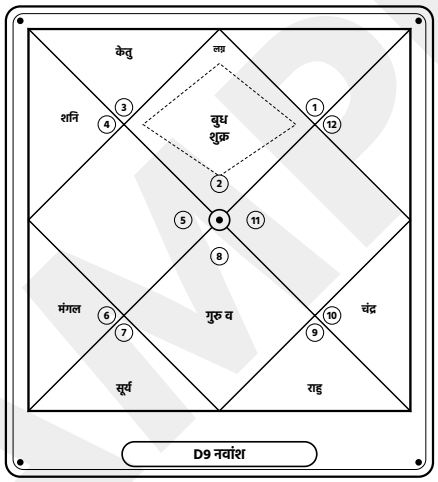

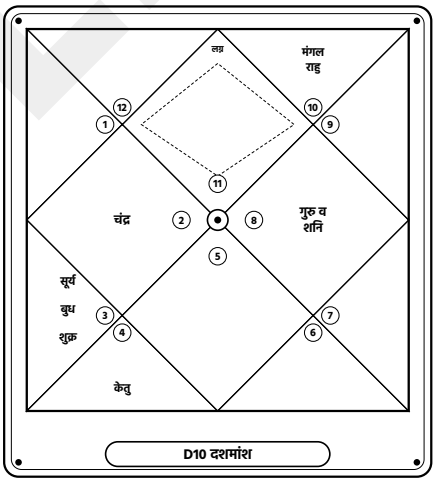

SAMPLE

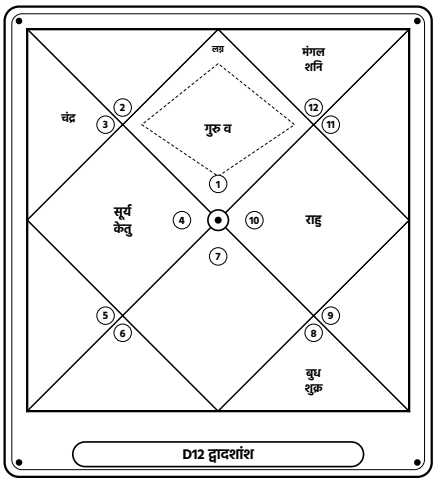

D12 द्वादशांश

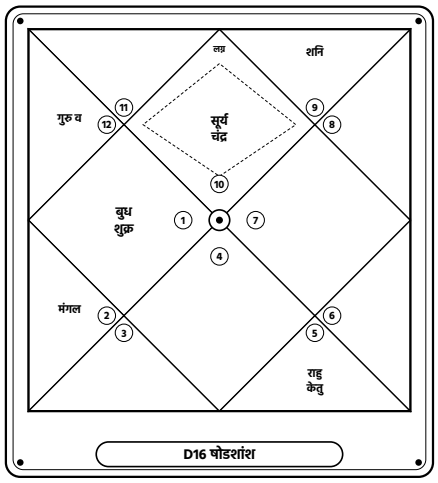

D16 षोडशांश

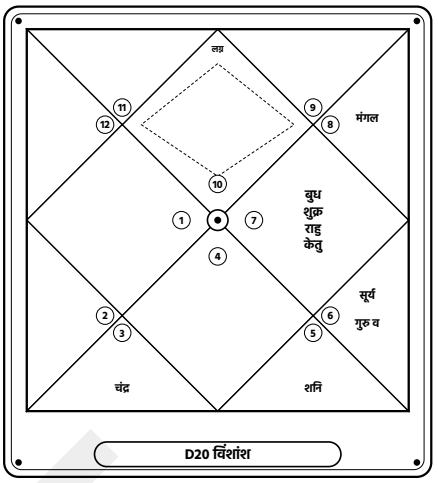

D20 विंशांश

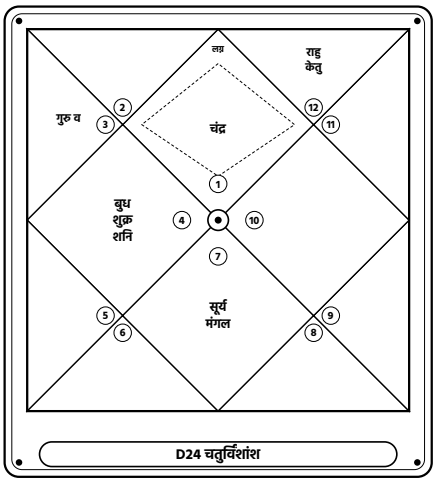

D24 चतुर्विंशांश

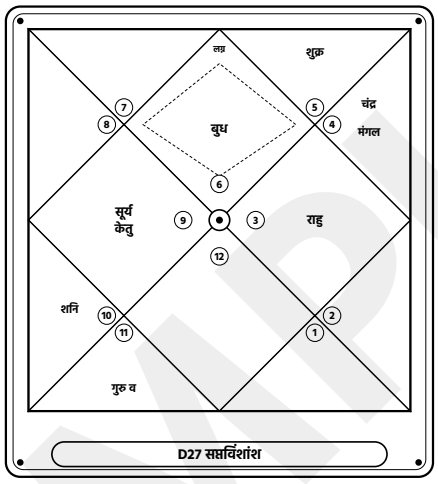

D27 सप्तविंशांश

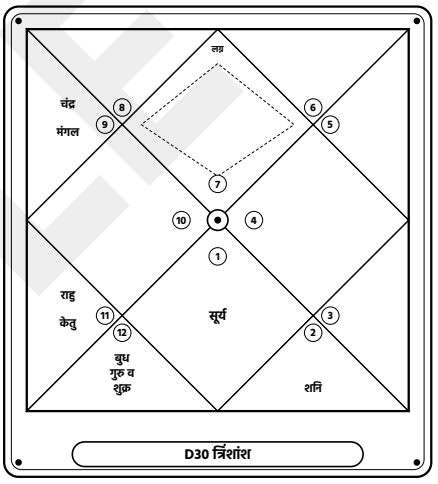

D30 त्रिंशांश

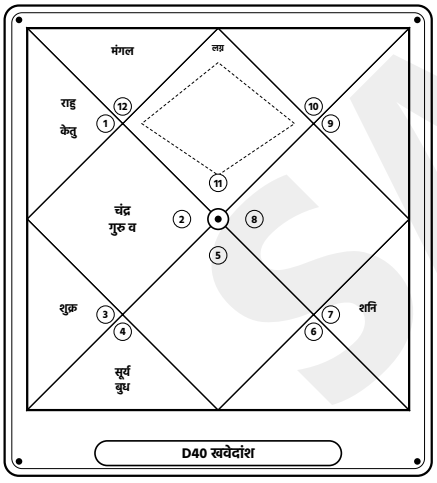

D40 खवेदांश

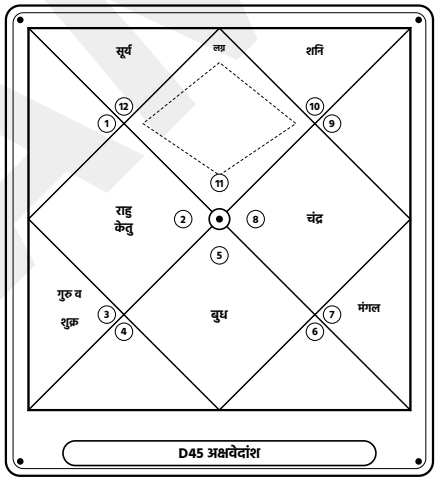

D45 अक्षवेदांश

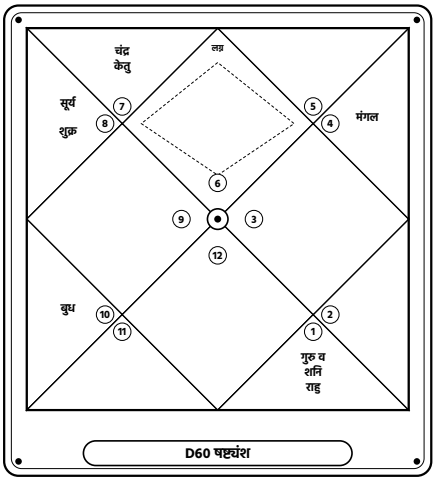

D60 षष्ट्यंश

SAMPLE

विंशोत्तरी अंतर्दशा

भोग्य दशा : राहु – 13 वर्ष, 2 माह, 10 दिन

राहु (18)
18/06/1995 – 27/08/2008

–			
S+	गुरु	03/10/1995	0
S*	शनि	09/08/1998	3
*	बुध	26/02/2001	5
s-	केतु	16/03/2002	6
*	शुक्र	16/03/2005	9
--	सूर्य	08/02/2006	10
--	चंद्र	10/08/2007	12
*	मंगल	27/08/2008	13

गुरु (16)
27/08/2008 – 27/08/2024

s	गुरु	15/10/2010	15
-	शनि	28/04/2013	17
--	बुध	04/08/2015	20
-	केतु	09/07/2016	21
--	शुक्र	11/03/2019	23
*	सूर्य	28/12/2019	24
S++	चंद्र	28/04/2021	25
S++	मंगल	04/04/2022	26
S+	राहु	27/08/2024	29

शनि (19)
27/08/2024 – 28/08/2043

S	शनि	31/08/2027	32
++	बुध	10/05/2030	34
s++	केतु	19/06/2031	36
++	शुक्र	19/08/2034	39
*	सूर्य	01/08/2035	40
*	चंद्र	01/03/2037	41
--	मंगल	10/04/2038	42
s*	राहु	14/02/2041	45
-	गुरु	28/08/2043	48

बुध (17)
28/08/2043 – 27/08/2060

	बुध	24/01/2046	50
+	केतु	21/01/2047	51
*	शुक्र	21/11/2049	54
S++	सूर्य	27/09/2050	55
S*	चंद्र	27/02/2052	56
S+	मंगल	23/02/2053	57
S*	राहु	12/09/2055	60
S-	गुरु	18/12/2057	62
+	शनि	27/08/2060	65

केतु (7)
27/08/2060 – 28/08/2067

s	केतु	24/01/2061	65
++	शुक्र	26/03/2062	66
*	सूर्य	01/08/2062	67
*	चंद्र	02/03/2063	67
*	मंगल	29/07/2063	68
-	राहु	15/08/2064	69
-	गुरु	22/07/2065	70
++	शनि	31/08/2066	71
+	बुध	28/08/2067	72

शुक्र (20)
28/08/2067 – 28/08/2087

s	शुक्र	28/12/2070	75
*	सूर्य	28/12/2071	76
*	चंद्र	28/08/2073	78
+	मंगल	28/10/2074	79
*	राहु	28/10/2077	82
S-	गुरु	28/06/2080	85
S++	शनि	28/08/2083	88
S*	बुध	28/06/2086	91
S++	केतु	28/08/2087	92

सूर्य (6)
28/08/2087 – 28/08/2093

	सूर्य	16/12/2087	92
*	चंद्र	16/06/2088	92
s++	मंगल	21/10/2088	93
--	राहु	15/09/2089	94
s*	गुरु	04/07/2090	95
s*	शनि	16/06/2091	95
+	बुध	22/04/2092	96
*	केतु	28/08/2092	97
*	शुक्र	28/08/2093	98

चंद्र (10)
28/08/2093 – 29/08/2103

	चंद्र	28/06/2094	99
-	मंगल	27/01/2095	99
--	राहु	28/07/2096	101
+	गुरु	27/11/2097	102
s+	शनि	29/06/2099	104
++	बुध	28/11/2100	105
*	केतु	29/06/2101	106
+	शुक्र	28/02/2103	107
*	सूर्य	29/08/2103	108

मंगल (7)
29/08/2103 – 29/08/2110

	मंगल	26/01/2104	108
*	राहु	12/02/2105	109
++	गुरु	19/01/2106	110
-	शनि	28/02/2107	111
*	बुध	25/02/2108	112
S*	केतु	23/07/2108	113
S+	शुक्र	22/09/2109	114
S++	सूर्य	28/01/2110	114
S*	चंद्र	29/08/2110	115

टिप्पणी: दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

शनि साढ़ेसाती और ढैया

आपकी चंद्र राशि **कुंभ** है। साढ़ेसाती तब चलती है जब शनि आपकी चंद्र राशि से पिछली राशि, आपकी चंद्र राशि और उससे अगली राशि से गुज़रता है (लगभग साढ़े सात वर्ष)। ढैया या छोटी पनौती तब चलती है जब शनि आपकी चंद्र राशि से चौथी और आठवीं राशि से गुज़रता है (हर बार लगभग ढाई वर्ष)।

प्रकार	से	तक
साढ़ेसाती	02/06/1995	17/04/1998
ढैया (छोटी पनौती)	07/06/2000	07/04/2003
ढैया (छोटी पनौती)	10/09/2009	04/08/2012
साढ़ेसाती	24/01/2020	23/02/2028
ढैया (छोटी पनौती)	08/08/2029	31/05/2032
ढैया (छोटी पनौती)	22/10/2038	26/09/2041
साढ़ेसाती	06/03/2049	07/04/2057
ढैया (छोटी पनौती)	28/05/2059	07/03/2062
ढैया (छोटी पनौती)	30/08/2068	04/11/2070
साढ़ेसाती	15/01/2079	08/02/2087
ढैया (छोटी पनौती)	18/07/2088	21/05/2091

SAMPLE

तारा चक्र

तारा	नक्षत्र	स्वामी
जन्म	शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति	राहु
संपत	पूर्वा भाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा	गुरु
विपत	उत्तरा भाद्रपद, पुष्य, अनुराधा	शनि
क्षेम	रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा	बुध
प्रत्यरि	अश्विनी, मघा, मूल	केतु
साधक	भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा	शुक्र
वध	कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा	सूर्य
मित्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण	चंद्र
अति-मित्र	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा	मंगल

मंगल दोष

कहाँ से गिना	मंगल का भाव	मंगल दोष
लग्न	3	नहीं
चंद्र	7	**हाँ**
शुक्र	4	**हाँ**

परंपरा से मंगल दोष तब देखा जाता है जब मंगल भाव 1, 2, 4, 7, 8 या 12 में हो। विवाह से पहले इसे जीवनसाथी की कुंडली से मिलाया जाता है; यदि दोनों कुंडलियों में यह दोष हो, तो इसे संतुलित माना जाता है।

SAMPLE

शुभ बातें

मूलांक	**9**
भाग्यांक	**3**
मित्र अंक	**1, 3, 6, 9**
आयु के शुभ वर्ष	**18, 21, 27, 30, 36, 39, 45, 48**
शुभ दिन	**बुधवार, शुक्रवार, शनिवार**
शुभ ग्रह	**शुक्र, बुध, शनि**
सावधानी वाले ग्रह	**मंगल, गुरु, सूर्य**
मित्र राशियाँ	**वृषभ, तुला, मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ**
जीवन रत्न (लग्नेश)	**पन्ना**
उसी ग्रह के अन्य रत्न	**हरा टूरमलीन, पेरिडॉट**
भाग्य रत्न (नवमेश)	**नीलम**
विद्या और संतान का रत्न (पंचमेश)	**हीरा**
देवता	**विष्णु**
धातु	**कांस्य**
रंग	**हरा**
दिशा	**उत्तर**
समय	**सुबह**
अनाज	**मूँग**
मंत्र	**ॐ बुधाय नमः**

SAMPLE

एक नज़र में आपकी कुंडली

लग्न / चंद्र राशि / नक्षत्र	**मिथुन / कुंभ / शतभिषा**
तत्व संतुलन	वायु 3 पृथ्वी 2 जल 2 अग्नि 1
राशि स्वभाव संतुलन	चर 0 स्थिर 5 द्विस्वभाव 3
सबसे मज़बूत सहायक	**शनि, शुक्र, बुध**
सावधानी वाले ग्रह	**मंगल, गुरु, सूर्य**
योग	गजकेसरी योग, सुनफा योग, वाशि योग, अमला योग, राजयोग, विमल योग (विपरीत राजयोग)
चल रही दशा	**शनि – शनि (31/08/2027 तक)**

आपकी कुंडली में प्रधान तत्व है वायु तत्व, जो बुद्धि, संवाद और मिलनसारिता देता है। जिन ग्रहों को सबसे मज़बूत सहायक बताया गया है, उनकी दशाएँ, रंग, दिन और रत्न आपको सबसे अधिक सहारा देते हैं।

SAMPLE

एक नज़र में आपकी कुंडली

यह पृष्ठ आपकी पूरी कुंडली को निष्कर्षों में समेटता है। हर निष्कर्ष भावों, उनके स्वामियों, उनमें बैठे या उन्हें देखने वाले ग्रहों, अष्टकवर्ग अंकों, स्वाभाविक कारकों और विभाजित चार्टों को तौलता है। ये निष्कर्ष प्रवृत्तियाँ और ज़रूरी प्रयास बताते हैं; ये गारंटी नहीं हैं, और प्रयास व अच्छे निर्णयों से हर बात सुधर सकती है।

जीवन का क्षेत्र	निष्कर्ष	अंक (10 में से)	आगे की सबसे अच्छी अवधि
करियर और व्यवसाय	बहुत मज़बूत	8.6	—
धन और आर्थिक स्थिति	बहुत मज़बूत	8.3	—
विवाह और साझेदारी	मज़बूत	6.2	—
संतान	मध्यम	4.9	—
शिक्षा और विद्या	मध्यम	4.6	—
स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति	प्रयास ज़रूरी	3.7	—
घर, संपत्ति और वाहन	मज़बूत	6.7	—
यात्रा और विदेश से संबंध	प्रबल संकेत	7.8	—
आध्यात्मिक जीवन	मौजूद	4.6	—

आपकी कुंडली करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, घर, संपत्ति और वाहन के लिए सबसे मज़बूत है। जिन क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रयास और धैर्य चाहिए वे हैं शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति।

आपकी मुख्य शक्तियाँ

- आपकी कुंडली में राजयोग है: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं। जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।
- आपके लग्न के स्वामी बुध बलवान हैं (मित्र राशि, भाव 12), जो स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सफलता का ठोस आधार देता है।
- आपकी कुंडली में गजकेसरी योग है: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है। चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।
- आपकी कुंडली में अमला योग है: गुरु लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में है। लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर बनता है। यह बेदाग प्रतिष्ठा, नैतिक आचरण और अच्छे कामों से स्थायी यश देता है।

किस पर ध्यान चाहिए

- आपके लग्न के स्वामी बुध कठिन भाव 12 में हैं, इसलिए स्वास्थ्य और आत्मविश्वास की रक्षा करनी होगी; नियमित आदतें और पर्याप्त आराम मदद करते हैं।
- भाव 9 (भाग्य, पिता) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।
- भाव 12 (खर्च, विदेश) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।

आपका सबसे बलवान ग्रह

शनि आपकी कुंडली का सबसे बलवान ग्रह है (सम राशि, भाव 10, 100 में से 78)। इसकी अपनी दशा (27/08/2024 से 28/08/2043 तक) और उससे जुड़ी अंतर्दशाएँ आपके सबसे उपयोगी और सहायक समय हैं।

SAMPLE

आपका व्यक्तिगत फलादेश

मिथुन लग्न

स्वभाव

मिथुन वायु तत्व की द्विस्वभाव राशि है, जिसका स्वामी बुध है। आप जिज्ञासु, हाज़िरजवाब और बातूनी हैं, और नई चीज़ें आसानी से सीखते हैं। आपको पढ़ना, यात्रा, बातचीत और विविधता पसंद है, और आप प्रायः किसी प्रश्न के दोनों पहलू देख पाते हैं। इसका दूसरा पहलू बेचैनी है: एक साथ बहुत सी रुचियाँ आपकी ऊर्जा बिखेर सकती हैं, और आप आसपास के लोगों की अपेक्षा से अधिक बार अपना मन बदल सकते हैं।

शरीर और स्वास्थ्य

पारंपरिक वर्णन है — लंबा, दुबला और युवा दिखने वाला शरीर, भाव-भरे हाथ और चंचल आँखें। फेफड़े, कंधे, बाँहें, नसें और त्वचा संवेदनशील क्षेत्र हैं। मानसिक अधिक काम, अनियमित नींद और घबराहट परेशानी के सबसे आम कारण हैं, इसलिए आराम, प्राणायाम और शांत दिनचर्या आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राशियों का वर्णन; प्रथम भाव के फल; वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — राशियों का स्वभाव; वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी) — लग्न राशि के फल।

आपकी चंद्र राशि: कुंभ

कुंभ राशि में चंद्रमा होने से आप मित्रवत, स्वतंत्र और मानवतावादी हैं। आप समाज और विचारों के बारे में सोचते हैं और असामान्य विषयों में रुचि लेते हैं। आप तटस्थ लग सकते हैं, पर आपकी मित्रताएँ सच्ची होती हैं। दिमाग और दिल में संतुलन बनाना आपकी सीख है।

आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — बारह राशियों में चंद्रमा के फल; कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — राशियों में चंद्रमा; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — चंद्र राशि के फल।

आपका जन्म नक्षत्र: शतभिषा (चरण 2)

स्वामी ग्रह: राहु · देवता: वरुण (ब्रह्मांडीय जल के देवता) · प्रतीक: खाली वृत्त

शतभिषा स्वतंत्रता, वैज्ञानिक सोच और उपचार की क्षमता देता है। आप संकोची, सत्यवादी और रहस्यों में रुचि रखने वाले हैं। चिकित्सा, शोध, ज्योतिष, तकनीक और उपचार आपके अनुकूल हैं। एकांत आपको ताज़गी देता है, पर स्वयं को अलग-थलग करने से बचें।

आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — नक्षत्रों में जन्म के फल; पृथुयशस का होरासार — जन्म नक्षत्र के फल; रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — नक्षत्रों के गुण।

SAMPLE

आपके भावों में ग्रह

भाव 1 में सूर्य (मिथुन, सम राशि)

पहले भाव में सूर्य होने से आपमें आत्म-बोध प्रबल होता है, व्यवहार में गरिमा होती है और नेतृत्व करने की इच्छा होती है। लोग आपको नोटिस करते हैं, और आप अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करते हैं। आत्मविश्वास और सम्मान की भावना आपकी शक्ति हैं; अभिमान, तेज़ गुस्सा और आलोचना के प्रति अधीरता वे कमज़ोरियाँ हैं जिन्हें संभालना है। शास्त्र इस स्थिति को अच्छी जीवन-शक्ति के साथ-साथ गरमी से जुड़ी परेशानियों, आँखों पर ज़ोर और कभी-कभी सिरदर्द से भी जोड़ते हैं। ज़िम्मेदारी के पदों पर आप अच्छा करते हैं, और ईमानदारी से काम करने पर सरकार या वरिष्ठों का सहयोग मिलने की संभावना है।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में सूर्य।

भाव 9 में चंद्र (कुंभ, सम राशि)

नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में चंद्रमा।

भाव 3 में मंगल (सिंह, मित्र राशि)

तीसरे भाव में मंगल उसकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है। यह असाधारण साहस, पहल और प्रतिस्पर्धियों पर विजय की क्षमता देता है। खेल, सेना, तकनीकी काम, बिक्री या निडर प्रयास माँगने वाले किसी भी क्षेत्र में आप अच्छा कर सकते हैं। शास्त्र पराक्रम और अपने प्रयास से सफलता के लिए इस स्थिति की प्रशंसा करते हैं। भाई-बहनों से संबंध प्रतिस्पर्धी पर रक्षा करने वाले हो सकते हैं।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में मंगल।

भाव 12 में बुध (वृषभ, मित्र राशि)

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है। विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में बुध।

भाव 6 में गुरु (वृश्चिक, वक्री, मित्र राशि)

छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में गुरु।

भाव 12 में शुक्र (वृषभ, स्वराशि)

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में शुक्र।

SAMPLE

भाव 10 में शनि (मीन, सम राशि)

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में शनि।

भाव 5 में राहु (तुला, मित्र राशि)

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राहु और केतु के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में राहु।

भाव 11 में केतु (मेष, मित्र राशि)

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राहु और केतु के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में केतु।

SAMPLE

आपकी कुंडली के योग

योग ग्रहों का एक विशेष मेल है। शुभ योग स्वाभाविक शक्ति के क्षेत्र दिखाते हैं; "सावधानी" वाले योग वे क्षेत्र दिखाते हैं जहाँ प्रयास और उपाय मदद करते हैं। योग अपने फल मुख्यतः उन ग्रहों की दशाओं में देते हैं जिनसे वे बनते हैं।

गजकेसरी योग (शुभ)

कैसे बना: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है।

चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।

सुनफा योग (शुभ)

कैसे बना: चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि।

चंद्रमा से दूसरे भाव में (सूर्य के अतिरिक्त) ग्रह होने पर बनता है। यह स्वयं अर्जित धन, बुद्धि और अच्छी प्रतिष्ठा देता है।

वाशि योग (शुभ)

कैसे बना: सूर्य से बारहवें भाव में बुध, शुक्र।

सूर्य से बारहवें भाव में ग्रह होने पर बनता है। यह उदारता, कौशल और सुख देता है।

अमला योग (शुभ)

कैसे बना: गुरु लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में है।

लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर बनता है। यह बेदाग प्रतिष्ठा, नैतिक आचरण और अच्छे कामों से स्थायी यश देता है।

राजयोग (शुभ)

कैसे बना: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं।

जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।

विमल योग (विपरीत राजयोग) (शुभ)

कैसे बना: भाव 12 का स्वामी शुक्र भाव 12 में है।

बारहवें भाव के स्वामी के कठिन भाव में होने पर बनता है। यह अच्छा आचरण, आत्मनिर्भरता और बचत देता है, तथा खर्च घटाता है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — योगों के अध्याय (नाभस, चंद्र, सूर्य, राज और धन योग); मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — योग अध्याय; कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — चंद्रमा और सूर्य से बनने वाले योग।

SAMPLE

आपकी दशाएँ

विंशोत्तरी पद्धति में जीवन को नौ ग्रहों द्वारा एक तय क्रम में चलाई जाने वाली अवधियों (महादशाओं) में बाँटा गया है। हर अवधि उप-अवधियों (अंतर्दशाओं) में बँटी है। किसी अवधि के फल इस पर निर्भर करते हैं कि आपकी अपनी कुंडली में उसका स्वामी ग्रह किसका प्रतिनिधि है: किन भावों का स्वामी है, किस भाव में बैठा है और कितना बलवान है।

शनि महादशा: 27/08/2024 से 28/08/2043 तक (अभी चल रही है)

शनि की दशा धैर्य, कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी माँगती है। परिणाम धीरे आते हैं पर टिकाऊ होते हैं। यह अनुशासन बनाने, दूसरों की सेवा करने, जोड़ों का ध्यान रखने और शॉर्टकट से बचने का समय है।

शनि आपके भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 10, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। यह सम राशि में है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (27/08/2024), शुक्र (19/06/2031)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (19/08/2034), मंगल (01/03/2037)।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — दशा और अंतर्दशा के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — दशाओं के फल; कालिदास का उत्तर कालामृत — दशा फल।

SAMPLE

आपके जीवन में शनि साढ़ेसाती

शनि को एक राशि पार करने में लगभग ढाई वर्ष लगते हैं। जब वह आपकी चंद्र राशि से पिछली राशि, आपकी चंद्र राशि और उससे अगली राशि से गुज़रता है, तो साढ़े सात वर्ष की इस अवधि को साढ़ेसाती कहते हैं। यह केवल कठिनाई का नहीं, बल्कि ज़िम्मेदारी, मेहनत और भीतरी विकास का समय है। बहुत से लोग ईमानदारी और धैर्य से काम करके साढ़ेसाती के दौरान स्थायी उपलब्धियाँ पाते हैं।

अभी चल रही है: साढ़ेसाती — शनि मीन में, 03/06/2027 तक। तीसरा चरण (चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि): पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ और आर्थिक मामले केंद्र में आते हैं। सोच-समझकर बोलना, बचत करना और ईमानदार व्यवहार राहत देते हैं। चरण के अंत के साथ प्रभाव धीरे-धीरे हल्के होते जाते हैं।

पारंपरिक उपाय

पारंपरिक उपाय: शनिवार को हनुमान चालीसा या शनि स्तोत्र का पाठ करें; शनिवार की शाम पीपल के पेड़ के नीचे तिल के तेल का दीपक जलाएँ; ज़रूरतमंदों को काले तिल, उड़द दाल, लोहे की वस्तुएँ, कंबल या जूते-चप्पल दान करें; बुज़ुर्गों और मेहनतकश लोगों की सेवा करें; शराब, बेईमानी और कठोर व्यवहार से बचें। ये भक्ति और दान की पारंपरिक प्रथाएँ हैं और चिकित्सा या पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं।

SAMPLE

स्रोत और अस्वीकरण

इस रिपोर्ट के फलादेश नीचे दिए शास्त्रीय ग्रंथों के सिद्धांतों के आधार पर हमारे अपने शब्दों में लिखे गए हैं। संदर्भ ग्रंथ और विषय के नाम से दिए गए हैं।

- बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है)
- वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी)
- कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी)
- मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी)
- वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी)
- कालिदास का उत्तर कालामृत
- नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि
- पृथुयशस का होरासार
- रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि
- गरुड़ पुराण (रत्न-परीक्षा प्रसंग)
- नीलकंठ की ताजिक नीलकंठी (वर्षफल)
- लाल किताब परंपरा (केवल पद्धति; उपाय सामान्य पारंपरिक उपाय हैं)

SAMPLE